International Journal of Information Movement Vol.6 Issue III (July 2021)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 5-12`

कांशीराम और अस्मिता की राजनीति

समशेर सिंह
email: sssingh76@yahoo.com

कांशीराम ने अम्बेडकर के पश्चात् दलित राजनीति में उत्पन्न हुई नेतृत्वहीनता को भरने की कोशिश की। एक साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर आए कांशीराम ने भारतीय राजनीति को अपने विचारों के माध्यम से एक नई दिशा व दशा प्रदान की। अभी तक जो राजनीतिक दल दलित व बहुजन समाज के हितों की उपेक्षा कर रहे थे। कांशीराम के आगमन ने ऐसे राजनीतिक दलों को बहुजन समाज के हितों के प्रति गतिशील कर दिया। अब उनके मध्य इसी बात की होड़ पैदा हो गई की, बहुजन समाज का सबसे बड़ा हितैषी वही है। यह सब कांशीराम के भारतीय राजनीति में आगमन के कारण ही सम्भव हो पाया।

समाज का निर्माण मानव समूहों से निर्मित होता है और मानव समूहों की अपनी एक अलग पहचान होती है जो कि संस्कृति, भाषा, रीति–रिवाजों में परिलक्षित होती है। उसकी यही विशिष्टता समाज में उसे एक सामाजिक– राजनीतिक–सांस्कृतिक रूप से एकजुट व संगठित करने में महत्वपूर्ण कारक होती है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में ऐसी विशिष्टता व पहचान उच्च वर्णों तक ही सीमित रही। जिसके कारण उनके मध्य सामाजिक व सांस्कृतिक एकता की भावना का संचार हुआ और उन्होंने आप को संगठित कर भारतीय समाज के विविध शक्ति केन्द्रों पर अपना अधिपत्य व वर्चस्व स्थापित किया। उन्होंने अनेक विविध आयामों की रचना कर भारतीय सामाजिक व्यवस्था को अपने हितों के अनुकूल निर्मित किया यही कारण था कि जहां यह व्यवस्था उनके हितों को परिलक्षित करती थी वहीं दूसरी तरफ बहुजन–दलित समाज के लिए यह शोषण व उत्पीड़नकारी साबित हुई।

वर्णव्यवस्था और विभिन्न जातियों की संरचना ने दलित बहुजन समाज की विशिष्टता व पहचान को निर्मित करने में बाधा उत्पन्न की जिसके कारण यह समाज सदियों से अपनी पहचान व अस्तित्व उच्च वर्णों द्वारा निर्मित सामाजिक व्यवस्था में खोजता रहा। दलित व बहुजन समाज के अनेक महापुरुषों व समाज सुधारकों ने दलित समाज में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न कर उन्हें सामाजिक स्तर पर एकजूट कर इस सामाजिक व्यवस्था की विषमताओं से बाहर निकालने की कोशिश की। डॉ. अम्बेडकर ने दलित समाज में सामाजिक एकता स्थापित करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया। जिसके माध्यम से दलित समाज न केवल सामाजिक दासता की जंजीरों को काटने में सक्षम हो सकता था बल्कि इसके द्वारा राजनीतिक सत्ता तक अपनी पहुंच सम्भव बना सकता है और डॉ. अम्बेडकर के अनुसार राजनीतिक सत्ता वह कुंजी होती है जिसके माध्यम से दलित समाज अपनी मुक्ति व विकास के द्वार खोल सकता था।[i]

कांशीराम बसपा दलित–बहुजन समाज में इसी अस्मिता की राजनीति को स्थापित कर बहुजन समाज को राजनीतिक सत्ता के करीब ले जाने की कोशिश करते नजर आते हैं। बहुजन समाज में सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने के लिए

कांशीराम, ऐतिहासिक घटनाओं, विभिन्न बहुजन महापुरुषों व नायकों तथा प्रचलित दंत कथाओं का सहारा लेकर अनेक प्रतीकों व मिथकों का निर्माण करते हैं। कांशीराम डॉ. अम्बेडकर की अपेक्षा एक व्यवहारिक राजनेता थे जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में हाशिये पर पड़े समाज के लोगों की भागीदारी को सुनिश्ति करना चाहते थे। कांशीराम का जब सार्वजनिक जीवन में आगमन हुआ उस समय बहुजन समाज हजारों जाति–उपजातियों में विभक्त होकर वर्णव्यवस्था व जातिप्रथा के अन्याय व शोषण को सहने पर मजबूर था। कहने के लिए तो बहुजन समाज बहुसंख्यक था लेकिन यह बिखरा हुआ था, इनके बीच सामाजिक व सांस्कृतिक एकता का अभाव था। यह समाज अपने इतिहास व संस्कृति से पूर्णतः अनभिज्ञ था। कांशीराम सर्वप्रथम इनके मध्य सामाजिक व सांस्कृतिक एकता को उत्पन्न कर उनके मध्य पहचान व अस्तित्व से परिचित करना चाहते थे।[ii]

अतः कांशीराम ने महसूस किया इसके लिए बहुजन समाज का अपना मीडिया होना अनिवार्य है। भारतीय मीडिया मनुवादी और ब्राह्मणवादी हितों को ज्यादा महत्व देता था और बहुजन समाज के बारे में सूचनाओं को विकृत कर पेश करता था। कांशीराम का इस विषय में मत था कि अखबार सामाजिक चेतना उत्पन्न करने का एक शक्तिशाली माध्यम है और भारत में स्वाधीनता संग्राम में हथियार के रूप में इसका इस्तेमाल किया जा चुका है। फरवरी 1981 में उनके द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रिका 'द ऑप्रेस्ड इंडियन' में उन्होंने 10 वर्षों के भीतर बहुजन मीडिया को मजबूत आधार देने का खाका तैयार किया। यह योजना पांच चरणों में लागू की जानी थी, मीडिया की शरूआत करना, नियमित करना, स्थायित्व देना, मानकीकरण करना और स्थायी बनाना। उन्होंने इसे मिशन 'प्रकाशन योजना' का नाम दिया और इस योजना के अनुसार कांशीराम ने हिन्दी में बहुजन संगठक नामक अखबार निकाला।[iii]

इस अखबार के माध्यम से कांशीराम ने बहुजन समाज में सामाजिक व राजनीतिक चेतना उत्पन्न की रणनीति तैयार कि जिसके तहत बहुजन समाज के हितों से संबंधित विभिन्न मुद्दों, विषयों व समसयाओं को विस्तृत रूप से छापा जाता था। यह अखबार शीघ्र ही बहुजन समाज की आवाज बनकर उभरने लगा। इसके माध्यम से बहुजन समाज में सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता पैदा करने के लिए, बहुजन समाज के इतिहास, उनके महापुरुषों व नायकों के विषय में लेख प्रकाशित किए जाने लगे। बसपा के गठन के साथ ही कांशीराम ने बौद्धिक आधार को विकसित करने हेतू एक शोध शाखा निर्माण भी किया।

इन समाचार पत्रों के माध्यम से कांशीराम ने बहुजन समाज की विभिन्न समस्याओं तथा उनके समाधान के लिए माहौल बनाना प्रारम्भ कर दिया। नैमिशराय लिखते हैं कि यह दलित–शोषित समाज में उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध करा उनमें राजनीतिक चेतना पैदा करने का काम करता है। मनुवादी व्यवस्था द्वारा बहुजन समाज के प्रति निर्मित किए जाने वाले षडयंत्रों व नीतियों का पर्दाफाश करता है ताकि बहुजन समाज इनके प्रति सचेत रह कर अपने हितों को संरक्षण कर सके।[iv] वस्तुतः इन अखबारों के माध्यम से जहां एक बहुजन समाज में अपनी कमजोरियों को दूर कर संगठित होने का मंच प्रदान किया

वहीं उन्हें सामाजिक राजनीतिक व सांस्कृतिक चेतना पैदा करने का भी काम किया। इन्हीं के द्वारा बहुजन समाज के इतिहास व संस्कृति के विषयों के साथ इस समाज के महापुरुषों व नायकों का भी चित्रण प्रस्तुत कर बहुजन समाज में अपने इतिहास व संस्कृति के प्रति बोध पैदा करने की कोशिश की गई।[v]

बहुजन संगठक में बहुजन समाज के इतिहास व सामाजिक विषमताओं के प्रति उनके महानायकों का संघर्षों की कहानी, लेख, कविता, नाटक इत्यादि के माध्यम से चित्रण भी किया जाता था। इसमें आक्रोश की भावना का समावेश होता था और सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करने का आह्वान भी। शीघ्र ही इन अखबारों ने बहुजन समाज में अपनी पैठ बना ली और इन्हें कांशीराम के विचारों, कार्यक्रमों व योजनाओं का मुख पत्र माना जाने लगा। इसके माध्यम से बहुजन समाज को अपने इतिहास व संस्कृति से परिचित करा उन्हें ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रूप से एक जुट होने के लिए प्रेरित किया।[vi]

कांशीराम ने बहुजन समाज में सामाजिक व राजनीतिक चेतना की उत्पति के लिए बहुजन समाज के अनेक महापुरुषों व नायकों को खोज निकालने की कोशिश की जो अभी तक बहुजन समाज में कहानियों व स्मृतियों में जीवित थे। इसके लिए कांशीराम ने बौद्धिक आधार को विकसित करने के लिए एक शोध शाखा का भी निर्माण किया। पार्टी के बुद्धिजीवी और विचारक शामिल थे जिनका मुख्य कार्य दलित व बहुजन समाज के इतिहास की खोज, मिथकों का निर्माण और बहुजन समाज के साहित्य का निर्माण करना था जिसके माध्यम से दलित व बहुजन समाज में सामाजिक, राजनीतिक चेतना का विकास किया जा सके। इस कार्य हेतू जिला व ब्लाक स्तर पर भी इस शोध शाखाओं का निर्माण किया गया था।[vii]

एक सभा को सम्बोधित करते हुए कांशीराम ने कहा था कि आज बहुजन समाज को अपने उन महापुरुषों के विषय में अध्ययन करना जरूरी हो जाता है जिन्होंने मनुवादी इस विषमतामूलक सामाजिक व्यवस्था के प्रति संघर्ष किया है। उनकी सफलताओं और विफलताओं को अपने संघर्ष का आधार बनाकर अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहे और उन्हें प्राप्त करने की कोशिश की जानी चाहिए। उनके संघर्ष व योगदान दलित व बहुजन समाज तक न पहुंच पाऐ इसलिए मनुवादियों ने इसे छिपने की कोशिश की थी अतः हमारा यह दायित्व बन जाता है कि उनकी योगदान व संघर्ष की गाथा को दलित व बहुजन समाज तक पहुंचाकर उन्हें एकजुट करने की कोशिश करनी चाहिए। नैमिशराय लिखते हैं कि आज दलित शोषित समाज के लोग अपनी उस सांस्कृतिक विरासत से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ है जिसने उन्हें हजारों वर्षों पूर्व एकता के सूत्र में बांधकर मोहनजोदड़ो–हड़प्पा की संस्कृति का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[viii]

अतः कांशीराम सांस्कृतिक राजनीति के माध्यम से दलितों के बीच आत्मसम्मान की भावना पैदा करने की कोशिश करते हैं। इस हेतू उन्होंने कई साधनों का प्रयोग किया जिनमें एक तरीका यह था कि प्रत्येक दलित पिछड़ी जाति के संतों, गुरुजनों एवं नायकों को महत्व दिया जाऐ। कांशीराम इन दलित बहुजन समाज के नायकों को राजनीतिक स्रोत

में परिवर्तित करना चाहते थे। दूसरी तरफ कांशीराम इन नायकों की छवि के माध्यम से दलित पिछड़ों में पहचान के प्रतीक के रूप में स्थापित करना चाहते थे।[ix] इस कार्य हेतू कांशीराम ने दलित बुद्धिजीवियों एवं शिक्षकों की एक कमेटी का गठन किया जो विभिन्न जातियों के नायकों एवं संतों के विषय में जानकारी एकत्रित करती थी।

इस क्रम में संत रविदास, कबीर और नारायण गुरु जैसे संतों के योगदान को खोज निकाला गया जिन्होंने जातिवाद, अस्पृश्यता, सामाजिक ऊंच–नीच व अन्य विषमताओं का घोर विरोध किया। इन सभी संतों ब्राह्मणवादी परम्पराओं और सामाजिक असमानता के खिलाफ संघर्ष करते थे तथा दलित समाज को अपने अधिकारों के प्रति सचेत कर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते थे। राजनीतिक हितों को ध्यान में रखकर बसपा ने इस संतों व नायकों पर छोटी–छोटी पुस्तकों की रचना की। ये पुस्तकें राजनीतिक सभाओं, मेलों एवं अन्य स्थानीय क्षेत्रों में दलित बहुजन समाज के लोगों के मध्य वितरित की जाती थी। बद्रीनारायण लिखते हैं कि कांशीराम के समक्ष मुख्य चुनौती यह थी इन नायकों का चित्र निर्माण करना क्योंकि बिना चेहरे के दलित बहुजन समाज में सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने में बाधा हो सकती थी। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर कांशीराम ने प्रचलित कथाओं के आधार पर इन नायकों को छवि प्रदान करने की कोशिश की जिसके तहत कांशीराम व अन्य लोगों ने चित्रकारों के पास बैठ कर नायकों के रेखाचित्रों को निर्मित करवाया।[x] जिन्हें पोस्टरों व कैलेंडरों के माध्यम से दलित समाज के घरों तक पहुंचाने की कोशिश की। राजनीतिक सभाओं व रैलियों में भी इनका वितरण किया जाता था। वस्तुतः इस रणनीति के आधार पर कांशीराम दलित व बहुजन समाज के लोगों के बीच सामाजिक चेतना उत्पन्न करने में सफल रही और इस सामाजिक चेतना ने बसपा के लिए सामाजिक आधार को और अधिक मजबूत किया।

बद्रीनारायण लिखते हैं कि इन सब माध्यमों के द्वारा कांशीराम ने एक मिथक एवं साझी स्मृति निर्मित करने में मदद की जो धीरे–धीरे दलित व बहुजन समाज के द्वारा स्वीकृत की जाने लगी। उत्तर प्रदेश के दलितों में जातीय गर्व एवं महिमा को उभारने में इन मिथकों, स्मृतियों और चेहरों के बीच एक जीवन्त रिश्ता कायम कर दिया। कांशीराम ने उत्तरप्रदेश की राजनीति को केन्द्र में रखते हुए वहां स्थानीय नायक–नायिकाओं और महापुरुषों को दलित व बहुजन समाज के मध्य लोकप्रिय बनने की तरफ ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया। जिसके अन्तर्गत उन्होंने कोरी जातियों के मध्य झलकारी बाई, पासियो के मध्य बिजली महाराज व बालेदीन को लोकप्रिय बनाया। इसके साथ–साथ अवध क्षेत्र में वीरापासी, इलाहाबाद में ऊदादेवी, पूर्वांचल और आजमगढ़ में महामाया को चमारों के मध्य लोकप्रिय बनाया गया। इसके अतिरिक्त बालु मेहतर, उदैया पासी, चेतराम चाटव, बांके चमार, गंगा बक्श, वीरापासी, मक्का पासी, मातादीन भंगी और महिलाओं में झलकाई बाई, ऊदादेवी, अवन्तिबाई, पन्नाधाय और महावीरीदेवी[xi] जैसे अनेक नायक– नायिकाओं की खोज की जिन्होंने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इस प्रकार कांशीराम इन जातीय नायक–नायिकाओं के माध्यम से दलित बहुजन

समाज में जातिय ऐतिहासिक स्वाभिमान पैदा कर ऐसी राजनीतिक एकता व संस्कृति पैदा करने की कोशिश कर रहे थे जो बसपा को राजनीतिक सत्ता के करीब पहुंचा सके। इन माध्यमों के द्वारा कांशीराम एक ऐसी सामाजिक क्रांति का सूत्रपात करना चाहते थे जो बहुजन समाज में सामाजिक एकता को स्थापित कर राजनीतिक सत्ता तक उनकी पहुंच को सम्भव व आसान बना सके।

अस्मिता व प्रतीकों की इस राजनीति के तहत कांशीराम ने दलित बहुजन समाज के महापुरुषों और संतों की मूर्तियों का निर्माण भी कराया उन्हें उत्तरप्रदेश के अनेक जिलों में स्थापित किया ताकि प्रतीकों की इस राजनीति के माध्यम से बहुजन एकता को निर्मित किया जा सके। वह एक ऐसी रणनीति थी जिसके माध्यम से बहुजन समाज में अपने इतिहास, संस्कृति और जातीय सम्मान व स्वाभीमान की भावना पैदा की जा सके। यह बहुजन समाज के सांस्कृतिक लामबंदी की प्रक्रिया थी।

इसी अस्मिता की राजनीति के तहत कांशीराम ने राष्ट्रीय स्तर के महानायकों जिनमें डॉ. अम्बेडकर प्रमुख थे, को लोकप्रिय बनाने की कोशिश की। डॉ. अम्बेडकर के व्यक्तित्व व जीवन संघर्ष से प्रायः दलित व बहुजन समाज अच्छी तरह से परिचित था। कांशीराम ने उनके आदर्शों व उद्देश्यों को बहुजन समाज के मध्य स्थापित करके, उन्हें बसपा द्वारा हासिल करने का लक्ष्य घोषित किया। डॉ. अम्बेडकर उनके लिए एक नए युग की शुरूआत करने वाले प्रवर्तक थे जिन्होंने शिक्षा के प्रचार–प्रसार के माध्यम से सामाजिक विषमताओं को दूर करने की कोशिश की। संविधान का निर्माण कर उन्होंने दलित बहुजन समाज को आगे बढ़ने के संवैधानिक प्रावधान निर्मित किए। जिनके प्रयोग में जाति, भाषा व धर्म कोई बाधा नहीं थी। कांशीराम के दिमाग में डॉ. अम्बेडकर की छवि एक रक्षक और भारतीय लोकतंत्र के शिल्पकार के रूप में विद्यमान हो गई थी। कुछ स्थानों पर उन्होंने डॉ. अम्बेडकर को बुद्ध के अवतार के रूप में उद्धृत किया।[xii]

कांशीराम डॉ. अम्बेडकर के लोकतांत्रिक विचारों और राजनीतिक सत्ता जिसे डॉ. अम्बेडकर 'मास्टर चाबी' और कांशीराम गुरु किल्ली कहते थे, से काफी प्रभावित थे। कांशीराम बार–बार अपने भाषणों व लेखनों में डॉ. अम्बेडकर द्वारा बताई गई राजनीतिक सत्ता रूपी मास्टर चाबी या गुरु किल्ली को प्राप्त करना ही अपना ध्येय लक्ष्य बताते थे। कांशीराम ने दलित व बहुजन समाज के मध्य डॉ. अम्बेडकर के विचारों का प्रचार–प्रसार करने के लिए उनकी प्रतिमाएँ निर्मित करवाई। इसके साथ–साथ पोस्टरों व कैलेंडरों तथा पत्रिकाओं, अखबारों और पुस्तकों के आवरण पर डॉ. अम्बेडकर की तस्वीरें प्रकाशित की गई ताकि आम व्यक्ति भी उनके योगदान से अवगत हो सके।

इसी प्रकार कांशीराम ने महात्मा ज्योतिबा फूले तथा ई.वी. रामासामी नायकर 'पेरियार' के सामाजिक असमानताओं के प्रति महत्वपूर्ण योगदान को जन–जन तक पहुंचाने की कोशिश की और महात्मा फूले ने शिक्षा के प्रचार–प्रसार को महत्व देते हुए बालक–बालिकाओं के एक समान शिक्षा पर जोर देते हुए विभिन्न पाठशालाओं को निर्माण कराया। उनका यह कदम ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध एक प्रतिगामी कदम

था क्योंकि उनकी सामाजिक व्यवस्था में दलित समाज के लोगों व महिलाओं की शिक्षा का कोई स्थान नहीं था। ज्योतिबा फूले ने किसान का कोडा व गुलामगिरि जैसी पुस्तकों की रचना कर समाज के शोषित, दमित समाज में अपने अधिकारों के प्रति सामाजिक चेतना उत्पन्न करने की कोशिश की। ज्योतिबा फूले और उनकी पत्नी सावित्री बाई इस ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरूद्ध एक नई सामाजिक क्रांति का सूत्रपात करने वाले थे।[xiii] जिनके पदचिन्हों का मार्गदार्शन करके दलित बहुजन आंदोलनों का निर्माण व संचालन हुआ। ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था के प्रति इस प्रकार के प्रतिगामी प्रयासों में पेरियार का नाम महत्वपूर्ण है। जिन्होंने दलित भारत में आर्य–अनार्य सिद्धांत के माध्यम से ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था व उसके प्रतिमानों को उखाड़ फेंकने की कोशिश की। पेरियार ने इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रामक रूख अपनाते हुए तर्कबुद्धि के आधार पर इस सामाजिक व्यवस्था को पूर्णतः असंगत ठहराया। भाग्य व भगवान जैसे मिथकों की घोर आलोचना की।[xiv]

अतः ज्योतिबा फूले और पेरियार ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को विभिन्न स्तरों पर चुनौती दी। कांशीराम द्वारा इन महापुरुषों के योगदान से बहुजन समाज को राजनीतिक व सामाजिक रूप से एक जुट कर सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने की कोशिश की। बद्रीनारायण लिखते हैं कि कांशीराम ने बहुजन समाज के नायकों व संतों का एक पिरामिड तैयार किया जिसके आधार पर स्थानीय नायक झलकारी बाई एवं ऊदादेवी जैसे वीरांगनाएं, दूसरे स्तर पर बलदेव, दलदेव, बिजली पासी जैसे स्थानीय राजा, तीसरे स्तर पर एकलव्य और शम्बूक, इनके ऊपर कबीर, रविदास और महात्मा बुद्ध थे। और पिरामिड के शीर्ष पर डॉ. अम्बेडकर, पेरियार और शाहूजी महाराज थे और पिरामिड के सामने कांशीराम और मायावती थे। ब्रदीनारायण लिखते हैं कि इस पिरामिड से यह दर्शाने की कोशिश की गई कि कैसे पिरामिड के हर स्तर में संचित प्रतीकात्मक शक्ति स्मृतियों में मौजूद स्थानीय नायकों के होते हुए डॉ. अम्बेडकर तक जाती है और यहां से कांशीराम और मायावती तक पहुंचती है और जिसे उनकी छवि के निर्माण में इस्तेमाल किया गया था।[xv]

कांशीराम ने सांस्कृतिक, राजनीतिक प्रचार–प्रसार के लिए बसपा की एक शाखा के रूप में जागृतिजत्था का भी निर्माण किया। आम लोगों के बीच उनकी भाषा व शैली में संवाद हेतू उस जत्थे का निर्माण किया गया था। नाटकों, गीतों व कविता के माध्यम से यह जत्था, गली, नुक्कड़ व ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागृति फैलाने का कार्य करता था। इसमें कलाकार, संगीतकार, अभिनेता, साहित्यकार आदि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को शामिल किया जाता था। कांशीराम के अनुसार इस तथ्य की दो प्रमुख कार्य से एक बहुजन समाज के लोगों के मध्य राजनीतिक संदेशों का प्रचार–पसार करना तथा दूसरा बहुजन समाज के बीच सृजनात्मक प्रतिभाओं और व्यक्तियों की खोज व उन्हें तैयार करना था। कांशीराम का कहना था कि इसके माध्यम से उन्होंने बहुजन समाज से अनेक कलाकारों को पहचाना व खोज निकाला है जिसमें महिलाऐं भी शामिल है। इस प्रक्रिया के तहत हमने उन कलाकारों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं से सम्पर्क बढ़ाया है जो हमारे मिशन से जुड़ना

चाहते हैं।[xvi]

अतः राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने में इस शाखा की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण रही। बसपा की हर राजनीतिक गतिविधि में प्रायः इसी शाखा का प्रयोग किया जाता था। राजनीतिक कार्यक्रमों के रूप में यह जत्था अम्बेडकर मेला ऑन व्हील्स, जैसी गतिविधियों व कार्यक्रमों में वाहनों पर विभिन्न तरह की चित्रकारी व पोस्टर बनाते थे। इस प्रकार कांशीराम ने परम्परागत दलित मेलों का उपयोग भी राजनीतिक अवसर के रूप में किया।

कांशीराम इस रणनीति के तहत दलित व बहुजन समाज के नायकों व महापुरुषों को राजनीतिक सांस्कृतिक भावना पैदा का ऐसा माध्यम स्थापित करना चाहते थे जिसके द्वारा उन्हें एक मंच पर एकत्रित कर राजनीतिक भागीदारी के लिए तैयार किया जा सके। कांशीराम का यह ऐसा कार्य था जो वर्णव्यवस्था व अमानवीय मूल्यों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को ध्वंस कर उसका प्रजातांत्रिक मूल्यों के आधार पर निर्माण कर सके।

कांशीराम बहुजन समाज की राजनीतिक भागीदारी व प्रतिनिधित्व को वास्तविकता के रूप में स्थापित करने के लिए कांशीराम ने योजनाबद्ध तरीके से रणनीतियों का निर्माण कर उन्हें लागू करने का पूरा प्रयास किया। कांशीराम सर्वप्रथम बहुजन समाज को संगठित कर राजनीतिक हिस्सेदारी के लिए तैयार करना चाहते थे लेकिन इसके लिए बहुजन का सामाजिक रूप से एकजुट होना अनिवार्य था। कांशीराम ने सर्वप्रथम 'बहुजन समाज' की परिकल्पना को आधार बनाते हुए बामसेफ, डी–एस–4 और तत्पश्चात बहुजन समाज पार्टी का गठन किया। बामसेफ सरकारी कर्मचारियों का संगठन था पे बैक टू सोसाइटी की परिकल्पना पर आधारित था। इसकी भूमिका दबाव समूह के रूप में थी जबकि डी.एस.–4 अर्धराजनीतिक संगठन था और बसपा का निर्माण पूर्ण राजनैतिक सहभागिता के लिए किया था। इन संगठनों की रणनीति व कार्यशैली प्रायः कांशीराम द्वारा ही निश्चित व निर्धारित की जाती थी।

References

i सिंह, सतनाम, बहुजन मसीहा, कांशीराम के भाषण, खण्ड–1, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. 18
ii नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 93
iii वही, पृ. 93–94
iv नैमिशराय, मोहनदास, बहुजन समाज, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 49
v वही, पृ. 54
vi सिंह, आर.के., कांशीराम और बी.एस.पी. कुशवाहा बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद, 1994, पृ. 103–104
vii नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 119
viii नैमिशराय, मोहनदास, बहुजन समाज, नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 55
ix नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 105–106
x नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 107
xi नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 107–108
xii नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 113
xiii चंचरीक, कन्हैयालाल, महात्मा ज्योतिवा फूले, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार 1998, पृ. 55–61
xiv कुमार, अजय, दलित पैंथर आन्दोलन, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, 2006

[xv] नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 111

[xvi] नारायण, बद्री, कांशीराम बहुजनों के नायक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 114